# स्वतः परिणमति वस्तु के....

(आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द जैन कृत
जैन-सिद्धान्त प्रश्नोत्तरमाला के सातवें भाग से संकलित)

स्वतः परिणमति वस्तु के, क्यों करता बनते जाते हो।
कुछ समझ नहीं आती तुमको, निःसत्व[1] बने ही जाते हो ॥1 ॥

अरे कौन निकम्मा जग में है, जो पर का करने जाता हो।
सब अपने अन्दर रमते हैं, तब किस विध करण[2] रचाते हो ॥2 ॥

वस्तु की मालिक वस्तु है, जो मालिक है वही कर्ता है।
फिर मालिक के मालिक बनकर, क्यों नीति न्याय गमाते हो ॥3 ॥

सत् सब स्वयं परिणमता है, वह नहीं किसी की सुनता है।
यह माने बिन कल्याण नहीं, कोई कैसे ही कुछ कहता हो ॥4 ॥

---

१. अचेतन; २. कार्य